

भारत सरकार
जनजातीय कार्य मंत्रालय
लोक सभा
अतारंकित प्रश्न संख्या 809
उत्तर देने की तारीख 04.12.2025

जनजातीय गौरव दिवस मनाना

809. डॉ. मन्ना लाल रावत:

क्या जनजातीय कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) जनजातीय गौरव दिवस मनाने और इसके ऐतिहासिक एवं सामाजिक उद्देश्यों को रेखांकित करने वाली घोषणा किस तिथि को की गई थी;

(ख) उस महान राष्ट्रीय नेता या आदिवासी व्यक्तित्व का नाम क्या है जिसकी स्मृति में यह दिवस मनाया जाता है;

(ग) क्या इस दिवस पर जनजातीय इतिहास, संस्कृति, परंपराओं और योगदान से संबंधित कोई विशेष कार्यक्रम, प्रदर्शनी या जागरूकता अभियान आयोजित किए जाते हैं और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(घ) क्या सरकार का विचार भविष्य में इस दिवस को बड़े पैमाने पर मनाने या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसे प्रचारित करने का है ?

उत्तर

जनजातीय कार्य राज्यमंत्री
(श्री दुर्गादास उइके)

(क) भारत सरकार ने दिनांक 12.11.2021 की राजपत्र अधिसूचना सं. फा. संख्या. 20025/01/2021-टीआरआई द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों, विशेष रूप से भगवान बिरसा मुंडा, जिनकी जयंती 15 नवंबर को मनाई जाती है, के योगदान को सम्मानित करने के लिए 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में घोषित किया।

(ख) जनजातीय गौरव दिवस भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जो एक सम्मानित आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे, जिनका उल्गुलान आंदोलन न्याय, गरिमा और स्व-शासन का प्रतीक था।

(ग) जी हां, भारत का वर्ष भर चलने वाला जनजातीय गौरव वर्ष (नवंबर 2024-नवंबर 2025) जनजातीय गौरव, पहचान और विरासत का राष्ट्रीय उत्सव बन गया। इस वर्ष भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाई गई, जो भारत के सबसे सम्मानित आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों में से एक हैं, जिनकी उल्गुलान की भावना न्याय, गरिमा और स्व-शासन के लिए आंदोलनों को प्रेरित करती है। इस उत्सव की जड़ें 15 दिसंबर 2021 तक जाती हैं, जब भारत सरकार ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों के योगदान को सम्मानित करने के लिए धरती आबा की जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस की घोषणा की थी। 150 साल के ऐतिहासिक पड़ाव को चिह्नित करने के लिए, सरकार ने वर्ष को जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में नामित किया, और राष्ट्र से अपने आदिवासी समुदायों को नए गौरव और जागरूकता के साथ मनाने का आह्वान किया।

पूरे वर्ष, भारत ने राज्यों, मंत्रालयों, शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक संगठनों और जमीनी समुदायों में गतिविधियों की एक जीवंत लहर देखी। जेजेजीवी जल्दी ही एक स्मारक घोषणा से एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन में बदल गया। प्रदर्शनियों, सांस्कृतिक प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, सोशल मीडिया अभियानों, खेल आयोजनों और अकादमिक संवादों ने भारत के आदिवासी समाजों की विविधता, लचीलेपन और योगदान को उजागर किया। यह जोश विशेष रूप से 1 से 15 नवंबर 2025 तक मनाए गए 15 दिवसीय जेजेजीवी पखवाड़े के दौरान दिखाई दिया, जिसने जनजातीय गौरव दिवस को बड़े पैमाने पर मनाये जाने से पहले देश को जश्न से भर दिया। आधिकारिक पोर्टल पर 2.5 लाख से अधिक कार्यक्रम पंजीकृत किए गए, जिनमें प्रदर्शनियां, सांस्कृतिक प्रदर्शन, कार्यशालाएं, खेल प्रतियोगिताएं, आदि सेवा केंद्रों में जन सुनवाई और अकादमिक संवाद शामिल हैं। जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा (1-15 नवंबर 2025) के दौरान मंत्रालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों और जनजातीय कल्याण विभागों और जनजातीय अनुसंधान संस्थानों जैसी राज्य नोडल एजेंसियों सहित 14,505 पंजीकृत उपयोगकर्ताओं द्वारा 2,04,074 से अधिक कार्यक्रमों के साथ यह जोश अपने चरम पर पहुंच गया।

प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं:

- माननीय राष्ट्रपति ने नवंबर 2025 में बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर संसद भवन में उनकी मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित की। उनके साथ माननीय उपराष्ट्रपति, माननीय अध्यक्ष (लोकसभा), राज्यसभा के उप सभापति और केंद्र के माननीय सांसद/मंत्री भी मौजूद थे।
- गुजरात के डेडियापाड़ा में एक भव्य राष्ट्रीय कार्यक्रम, जिसमें **माननीय प्रधानमंत्री** शामिल हुए, समारोह का समापन किया और **10,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं** की घोषणा की।
- माननीय केंद्रीय मंत्री (जनजातीय कार्य) ने झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री के साथ भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाने और झारखंड के स्थापना दिवस के अवसर पर भगवान बिरसा मुंडा परिसर उलिहातु, खूंटी में भगवान बिरसा मुंडा को पुष्पांजलि अर्पित की।
- 'रूट्स टू राइज' मंच के तहत 250 जनजातीय उद्यमों, 150 प्रदर्शकों और 100 स्टार्टअप्स को प्रदर्शित करते हुए यशोभूमि नई दिल्ली में **जनजातीय व्यापार सम्मेलन**।
- भोपाल में **एनजीओ कॉन्क्लेव** शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका पहलों के लिए सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- स्वदेशी भाषाओं और मौखिक परंपराओं का जश्न मनाते हुए भारतीय पर्यावास केंद्र, नई दिल्ली में **राष्ट्रीय जनजातीय साहित्य महोत्सव**।
- मुंबई में 'आदि चित्र' प्रदर्शनी में वारली, गोंड, भील और पिथौरा कला रूपों सहित 100 से अधिक आदिवासी चित्र प्रदर्शित किए गए।

समारोह का समापन कार्यक्रम गुजरात के देदियापाड़ा में आयोजित किया गया, जहां गुजरात सरकार ने जनजातीय कार्य मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से एक भव्य राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें जनजातीय समुदाय के सदस्यों, कलाकारों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी उपस्थित थे, जिनकी उपस्थिति ने जनजातीय कल्याण और समावेशी विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

(घ) जी हां, सरकार ने जनजातीय विरासत, पहचान और विकास के बारे में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जागरूकता को और बढ़ाने के लिए इस दिवस को भविष्य में बड़े पैमाने पर जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा है।